L.N. MITHILA UNIVERSITY
DARBHANGA (BIHAR)
B.A PART- III
PAPER- III
psychology (Honours)

Dr. Pramod Kumar Sahu,
Assistant Professor,
Guest Teacher,
V.S.J. College Rajnagar,
MADHUBANI (BIHAR)
pramodkumar[illegible]2018@gmail.com

TOPIC- meaning of socialization.

समाजीकरण का अर्थ (meaning of socialization)

जन्म के तुरंत बाद मानव शिशु न सामाजिक होता है और न ही असामाजिक। उस समय वह केवल कुछ जैविक गुणों (biological traits) वाला एक जीवित प्राणी होता है। धीरे-धीरे वह समाज की विशेष संस्कृति में पलते हुए सामाजिक प्राणी बन जाता है। वह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करने में समाज के अन्य व्यक्तियों के साथ अन्तःक्रिया करता है, जिससे उसमें नये-नये अनुभवों की प्राप्ति होती है। इन अनुभवों के फलस्वरूप वह सामाजिक परम्पराओं, नियमों एवं रीतियों के अनुसार व्यवहार करना सीख लेता है। समाज के नियमों को सीखने तथा उनके अनुसार व्यवहार करने की इस प्रक्रिया को समाजीकरण (socialization) कहा जाता है।

पहले के समाज मनोवैज्ञानिकों एवं समाजशास्त्रियों का ऐसा विचार था कि समाजीकरण की प्रक्रिया बचपन से प्रारम्भ होकर कुछ वर्षों के बाद समाप्त हो जाती है। परन्तु अब इस विचारधारा की मान्यता समाप्त हो गयी है और आधुनिक काल में विशेषज्ञों की सहमति इस बात पर हो गयी है कि समाजीकरण की प्रक्रिया किसी उम्र पर आकर रुकती नहीं है, बल्कि पूरे जीवन काल में चलती रहती है। समाजीकरण की प्रक्रिया कभी समाप्त नहीं होती है। समाजीकरण बदलती प्रत्याशाओं एवं माँगों के प्रति समायोजन की एक निरन्तर प्रक्रिया है।

समाजीकरण की कुछ नवीनतम परिभाषाएँ इस प्रकार हैं: सामाजिक वातावरण द्वारा प्रदत्त प्रशिक्षण के आधार पर व्यक्तियों के गुणों एवं व्यवहारों को प्रभावित करने की

प्रक्रिया को समाजीकरण कहा जाता है।
अतः समाजीकरण एक ऐसी अन्तःक्रियात्मक प्रक्रिया को कहा जाता है। जिससे व्यक्ति का व्यवहार उन समूहों के सदस्यों की प्रत्याशाओं के अनुरूप परिवर्तित हो जाता है। जिसका वह सदस्य होता है।
सामाजिक रूप से महत्त्वपूर्ण व्यवहारों के संजाल के सीखे प्रक्रिया मात्र व्यक्ति सीखता है, इसे समाजीकरण कहा जाता है। समाजीकरण मनुष्यों के स्कूलों अथवा माध्यम तथा सामाजिक समूहों मध्य आदर्श नियमों एवं मानकों के प्रति अनुपालनीय विश्वास के विषय ग्रहण करने की एक प्रक्रिया है।
किम्बाल यंग (Kimball Young 1956) के अनुसार समाजीकरण व्यक्ति को सामाजिक और सांस्कृतिक दुनिया से परिचय कराने, उसे समाज तथा उसके विभिन्न समूहों में एक सहभागी सदस्य बनाने तथा उस समाज के मानकों एवं मूल्यों को स्वीकार करने की प्रेरित करनेवाली प्रक्रिया है।
उन सभी परिभाषाओं के विश्लेषण के बाद समाजीकरण के स्वरूप के बारे में हमें निम्न तथ्य प्राप्त होते हैं।

(1) समाजीकरण सीखने का एक उपसेट :-
समाजीकरण सीखने का एक उपसेट इस अर्थ में माना गया है कि समाजीकरण के लिए सीखने की प्रक्रिया का होना अनिवार्य है। इस पक्ष पर अधिक से सभी परिभाषाओं में बल डाला गया है। अगर व्यक्ति में सीखने की प्रक्रिया नहीं होगी तो समाजीकरण भी नहीं होगा, परन्तु सभी तरह के सीखने को समाजीकरण नहीं कहा जाता है। सिर्फ उन्हीं प्रक्रियाओं को सीखना समाजीकरण में सम्मिलित किया जाता है जो सामाजिक रूप से महत्त्वपूर्ण होते हैं तथा जिससे व्यक्ति सामाजिक अंतःक्रिया में मदद मिलती है। यदि पर अधिक बल डाले हुए कहा है। सभी प्रकार का सीखना आवश्यक रूप से समाजीकरण नहीं कहलाता है। समाजीकरण में उन्हीं चीजों को सीखना सम्मिलित होता है।

(4) समाजीकरण चूँकि समाज के मानदंडों (norms) तथा मूल्यों (values) से सम्बन्धित होता है। अतः यह समाज एवं व्यक्ति को काफी प्रभावित करता है। जैसे कि हम जानते हैं सामाजिक मानदंड (social norms) तथा सामाजिक मूल्य (social values) सदा एक समान नहीं रहते हैं। समाज के साथ समय में परिवर्तित होते जाते हैं। फलस्वरूप समाज बदलते हैं जिसके बदले कुछ सामाजिक मानदंडों एवं मूल्यों के अनुसार सामाजिक व्यवहार को सीखना पड़ता है। जैसे भारतीय समाज की ही उदाहरण ले लीजिए आज से 50-60 वर्ष पूर्व तक स्त्रियाँ और पुरुषों स्त्रियों को पर्दा करना या घूँघट करना सिखलाया जाता था, परन्तु वर्तमान समाज में कहीं ऐसी कोई प्रतिबंध नहीं किया जाता है। चूँकि भिन्न भिन्न जगहों में सामाजिक मानदंड एवं मूल्य अलग अलग होते हैं। अतः समाजीकरण की प्रक्रिया में भी व्यक्ति में परिवर्तन होने से कुछ भिन्नता दिखलाई देती है। जैसे भारत में कुछ स्थान ऐसे हैं जहाँ पत्नी पति को स्वामी, आप कहकर सम्बोधित करती है जबकि कुछ स्थान ऐसे हैं जहाँ पत्नी पति को तुम कहकर सम्बोधित करती है।

(5) समाजीकरण में सांस्कृतिक आत्मसात्करण तथा सांस्कृतिक संचरण की प्रक्रियाएँ सम्मिलित होती हैं। यह पक्ष यह अन्य लोगों की तुलना में विशेष योग्यता से सबसे अधिक कार्य दर्शाता है। समाजीकरण में समाज के सांस्कृतिक मानदंडों तथा संस्कृति के अन्य तत्वों को आत्मसात किया जाता है। इतना ही नहीं समाजीकरण द्वारा समाज की नयी पीढ़ी पुरानी पीढ़ी से उसकी संस्कृति को ग्रहण करता है और फिर उस संस्कृति को उसके बाद की पीढ़ी के द्वारा ग्रहण किया जाता है। इस तरह से समाज में सांस्कृतिक संचरण समाजीकरण द्वारा होता है। इसका परिणाम यह होता है कि व्यक्ति समाजीकरण द्वारा सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्राणी के रूप में भली भाँति परिचित हो जाता है।

समाजीकरण में व्यक्ति के अहं या आत्म (Self) का विकास होता है। जब वह समाज के अन्य लोगों के साथ अन्तः क्रिया करता है तो स्वयं और दूसरे लोगों के अपेक्षित स्तर को समझने की योग्यता मिलती है। (Second & Backman) की परिभाषा में स्व पक्ष पर अधिक बल दिया गया है। क्योंकि इन लोगों ने समाजीकरण को एक अन्तः क्रियात्मक प्रक्रिया माना है।

निष्कर्ष तौर पर यह कहा जा सकता है कि समाजीकरण सामाजिक सीखना (Social Learning) की एक विशेष प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति अपने सामाजिक एवं परिवेश से प्रभावित होकर अपने अहं या आत्म (Self) को उचित मानकों (norms) एवं मूल्यों (values) के अनुसार विकसित करता है।

Dr. Pramod Kumar Sahu,
Date - 29/08/2020,
Sub. Psychology,

Scanned with CamScanner